कुमार जीवन - 51

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों से** - कुमार जीवन शक्तिशाली जीवन है। तो ब्रह्माकुमार अर्थात् रूहानी शक्तिशाली। जिस्मानी शक्तिशाली नहीं, रूहानी शक्तिशाली। कुमार जीवन में जो चाहे वह कर सकते हो। तो आप सब कुमारों ने अपने इस कुमार जीवन में अपना वर्तमान और भविष्य बना लिया, क्या बनाया? रूहानी बनाया।

➳ _ ➳ ईश्वरीय जीवन वाले ब्रह्माकुमार बने तो कितने श्रेष्ठ जीवन वाले हो गये। ऐसी श्रेष्ठ जीवन बन गई जो **सदा के लिए दु:ख से और धोखे से, भटकने से किनारा हो गया।** नहीं तो जिस्मानी शक्ति वाले कुमार भटकते रहते हैं। लड़ना, झगड़ना दुख देना, धोखा देना....यही करते हैं ना। तो कितनी बातों से बच गये। जैसे स्वयं बचे हो वैसे औरों को भी बचाने का उमंग आता है। सदा हमजिन्स को बचाने वाले।

➳ _ ➳ जो शक्तियाँ मिली हैं वह औरों को भी दो। अखुट शक्तियाँ मिली है ना। तो सबको शक्तिशाली बनाओ। **निमित्त समझकर सेवा करो। मैं सेवाधारी हूँ, नहीं। बाबा कराता है, मैं निमित्त हूँ। मैं पन वाले नहीं। जिसमें मैं-पन नहीं है वह सच्चे सेवाधारी हैं। (16-01-1985)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ आत्माओं को सिर्फ ज्ञान नहीं सुनाना है

→ बल्कि ज्ञान सुनाने के साथ साथ

- लाइट और माईट की साकाश भी देनी है

➳ _ ➳ जैसे जैसे सेवाएं बडती हैं

→ वैसे वैसे मैं (अहंकार) की भी तृप्ति होती है

→ **परमात्मा के द्वार में जो ताला लगा हुआ है.. वह मैं पन का ही ताला है**

- जब "मैं" गिर जाएगा... तब यह परमात्मा का द्वार खुलेगा
- "मैं गिर जाना" - अध्यात्म की सर्वोच्च अवस्था है
- **उसकी दया, कृपा और आशीर्वाद के बिना हम एक पत्ता भी नहीं हिला सकते**

→ "मैं" कहने का अधिकार सिर्फ एक परमात्मा को है

- उसके अतिरिक्त मैं कोई कह नहीं सकता